कौशल विकास सामग्री शृंखला-23

बटिक कला

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर (म.प्र.)

कौशल विकास सामग्री शृंखला-23

बटिक कला

कोड नं.	:	009 (सतत शिक्षा)
लेखिका	:	मीता ओझा
संपादन	:	तारा जायसवाल
फोटोग्राफ	:	गोपाल टेलर
संस्करण	:	प्रथम, अगस्त 2006
प्रतियाँ	:	2000
मूल्य	:	12/-

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : **राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर**
भारतीय ग्रामीण महिला संघ, म.प्र. शाखा
महालक्ष्मी नगर, सेक्टर आर, इन्दौर- 452010
फोन : 2551917, 2574104, फैक्स : 0731-2551573
Email : srcindore@dataone.in
literacy@satyam.net.in

मुद्रक : **कलर ग्राफिक्स, राजेन्द्र नगर, इंदौर**

आमुख

नवसाक्षरों को कौशल विकास के लिए अभिप्रेरित करने एवं मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु संसाधन केन्द्र द्वारा विषय विशेषज्ञों के तकनीकी सहयोग से **'बटिक कला'** पुस्तिका का निर्माण किया गया है। बटिक करने से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी प्रस्तुत पुस्तिका **बटिक कला** में दी गई है। नवसाक्षरों हेतु सरल एवं सुबोध भाषा में इस पुस्तिका का लेखन **श्रीमती मीता ओझा** द्वारा किया गया है। इस पुस्तिका के फोटोग्राफ हेतु **मृगनयनी एम्पोरियम, रूपमती एम्पोरियम** तथा **'कला कक्ष' संस्थान** के अधिकारियों एवं स्टाफ द्वारा प्रशंसनीय सहयोग प्रदान किया गया। संसाधन केन्द्र इनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

आशा है, इस कौशल विकास सामग्री शृंखला से नवसाक्षरों को उनकी रुचि की कला एवं रोजगार संबंधी आवश्यक जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

आपके अनमोल सुझावों का हमेशा स्वागत रहेगा।

कुन्दा सुपेकर
निदेशक
राज्य संसाधन केन्द्र
प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर (म.प्र.)

बटिक कला

बटिक कला आधुनिक समय में लोकप्रिय तथा अत्यंत आकर्षक कला है। बटिक शब्द इंडोनेशिया का शब्द है। यह Bitik या tik शब्द से बना है, जिसका अर्थ है ''बूंद'' या ''टपकना''। बटिक कला में हम मोम की सहायता से विभिन्न प्रकार के डिजाइन बनाकर उन्हें विभिन्न रंगों से रंगते हैं।

इस कला में किसी मशीन या औजार की आवश्यकता नहीं पड़ती है। कम पूँजी से इस व्यवसाय को प्रारंभ किया जा सकता है। इस व्यवसाय में अधिक जगह की भी आवश्यकता नहीं होती है।

घर की सजावट के साज-समान से लेकर पहनने के वस्त्रों तक

पर बटिक कला का प्रयोग हो रहा है। युवा पीढ़ी ने इस कला को सबसे ज्यादा महत्व दिया है। बटिक कला से कम समय और कम लागत में अनेक प्रकार के रंग-बिरंगे आकर्षक डिजाइन बनाए जा सकते हैं।

आवश्यक सामग्री–

बटिक करते समय हमें निम्नलिखित आवश्यक सामग्री की आवश्यकता रहती है -

- कपड़ा
- स्टोव
- पतेली
- मोम (पैराफिन, बीजवैक्स)
- एक मेज
- बिरोजा
- मोमबत्ती
- ब्लाक्स
- पेंसिल
- कार्बन पेपर
- ट्रेसिंग पेपर
- गोल ब्रश - 2,4,6 नं.
- फ्लेट ब्रश - 2,4,12 नं.
- प्रेस
- पुराने समाचार-पत्र
- लकड़ी की फ्रेम (रिंग)

रंग करने के लिए आवश्यक सामग्री–

- बाल्टी
- चम्मच
- रबर के दस्ताने
- कास्टिक सोड़ा
- रंग
- टब
- 2 मग
- नमक
- टर्की रेड ऑयल
- छोटे बाउल्स (कटोरे)

कपड़े का चुनाव

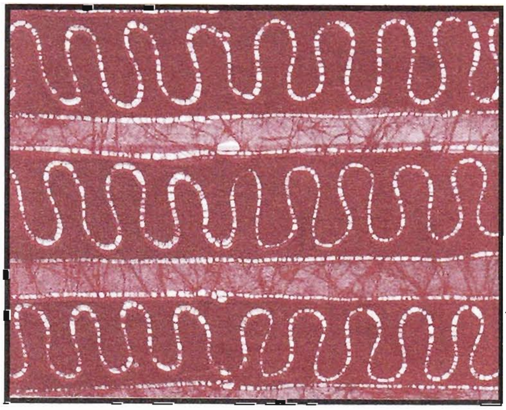

बटिक कला के लिए सूती, लिनन, वॉयल एवं सिल्क कपड़े का प्रयोग कर सकते हैं। सिंथेटिक कपड़ा इसके लिए उपयुक्त नहीं है। नायलोन के धागे मिले हुए कपड़े पर हम बटिक नहीं कर सकते हैं, क्योंकि गर्म मोम लगाने से नायलोन के धागे जल जाते हैं। बटिक के लिए सबसे उत्तम कपड़ा सूती होता है। सूती कपड़े पर वाल हैंगिस तथा पिक्चर्स आसानी से बन सकते हैं।

कपड़े की तैयारी

कपड़े को उपयोग में लाने से पहले उसे अच्छी तरह धो लेना चाहिए ताकि कपड़े का स्टार्च निकल जाए। उसके पश्चात् कपड़े को प्रेस करना चाहिए ताकि कपड़े की सलवटें दूर हो जाएं। इससे रंग पक्के व चमकदार चढ़ते हैं।

डिजाइन का चयन

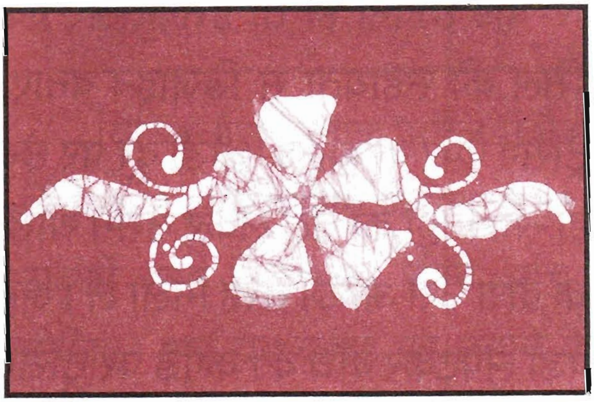

बटिक कला में बारीक डिजाइन नहीं लेना चाहिए। इसमें मोम लगाने में कठिनाई होती है। मोम फैलता है, इसलिए डिजाइन खराब हो जाती है। इसके लिए कोई भी सुंदर आकर्षक डिजाइन ली जा सकती है। जो भी वस्तु बनाना हो उसी के अनुरूप डिजाइन का चयन करना चाहिए। जैसे-मेजपोश या कुशन बनाना हो, तो इसके लिए फूल, पत्तियाँ, बेल,कार्नर के लिए डिजाइन ले सकते हैं।

कपड़े पर डिजाइन बनाना

डिजाइन के चयन के बाद इसे कपड़े पर उतारना होता है। इसके

लिए डिजाइन को ट्रेसिंग पेपर पर छाप लें। कार्बन पेपर लेकर उसे कपड़े पर बिछा दें, उस पर ट्रेसिंग पेपर को सही जगह जमाकर लगा दें। अब उस पर पेंसिल दबाते हुए डिजाइन पर चलाएं। इस प्रकार से डिजाइन कार्बन पेपर के द्वारा कपड़े पर आ जाएगा।

दूसरी विधि

एक ही डिजाइन को बार-बार छापना हो तो इसके लिए एक ट्रेसिंग पेपर लेकर उस पर पेंसिल की सहायता से डिजाइन बनाएं, फिर एक सुई या आलपीन से ट्रेसिंग पेपर पर थोड़ी-थोड़ी दूर पर छेद कर लें। अब एक प्याले में थोड़ा-सा मिट्टी का तेल लेकर उसमें थोड़ी नील मिला लें। किसी लकड़ी के द्वारा उसे अच्छी तरह मिला लें। अब लकड़ी की डंडी पर पुराना कपड़ा लपेटकर बाँध दें। कपड़े पर ट्रेसिंग पेपर बिछा दें। उस डंडी को जिस पर कपड़ा बंधा है, उसे नील व मिट्टी के तेल वाले घोल में थोड़ा भिगोकर ट्रेसिंग पेपर के ऊपर फेर दें। इस प्रकार कपड़े पर डिजाइन छप जाती है। इस विधि से एक ही डिजाइन का बार-बार प्रयोग किया जा सकता है।

कपड़े पर मोम लगाने की तैयारी

कपड़े पर डिजाइन बनाने के बाद उस पर मोम लगाया जाता है,

जिससे कि मोम वाले हिस्से पर कलर ना चढ़े तथा कपड़ा अपने मूल रूप यानि की सफेद ही रहे।

मोम बनाना– मोम तैयार करने के लिए हमें दो प्रकार के मोम की आवश्यकता रहती है।

पैराफिन मोम	500 ग्राम
बीज मोम	250 ग्राम
बिरोजा	100 ग्राम

विधि– गैस पर एक पतीले में पैराफिन मोम व बीज मोम डालकर पिघला लें। फिर उसमें बिरोजा डाल दें। अब मोम को किसी डंडी से अच्छी तरह मिला लें। धीमी आंच पर इसे आधे घंटे तक पकने दीजिए। अब यह कपड़े पर लगाने के लिए तैयार है। अब डिजाइन छपे हुए कपड़े को लेकर उस पर लकड़ी का फ्रेम कस लें या एक मेज पर बालूरेत बिछाकर उस पर यह कपड़ा फैला लें। ऐसा करने से मोम आसानी से लग जाएगा। अब ब्रश की सहायता से कपड़े पर मोम लगाना शुरू कर सकते हैं। ब्रश डिजाइन के अनुसार लेना चाहिए। यदि डिजाइन बड़ा है, तो अधिक नम्बर का ब्रश लें तथा बटिक की डिजाइन छोटी होने पर कम नम्बर यानि 0.1 नं. का ब्रश इस्तेमाल करना चाहिए।

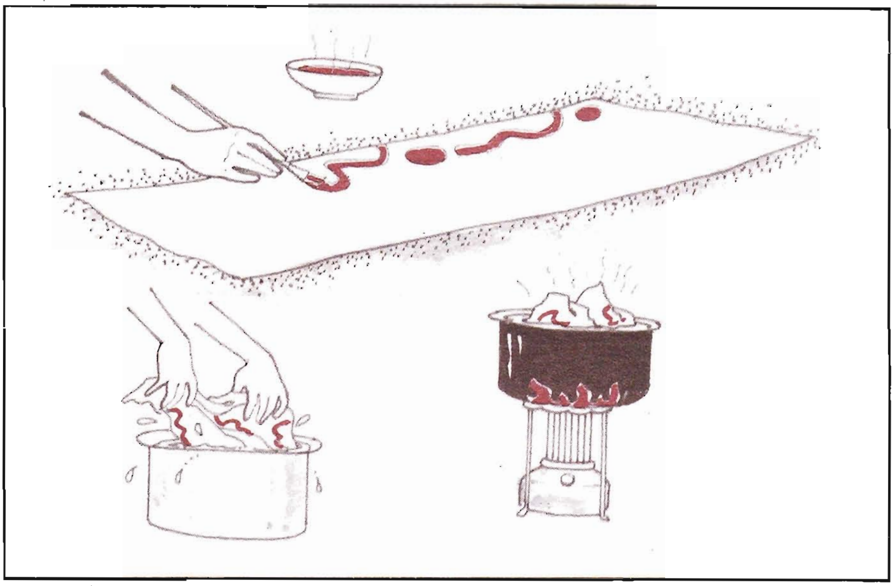

अब कपड़े पर ब्रश की सहायता से मोम लगाएं व पूरी डिजाइन की आउटलाइन पर मोम लगाकर पीछे की तरफ भी देख लें तथा जहाँ मोम नहीं लगा है, वहाँ पर मोम लगा दें। मोम हमेशा ज्यादा गर्म नहीं लगाना चाहिए और न ही अधिक ठंडा। अब डिजाइन की आउटलाइन पर मोम लगाने के बाद जहाँ पर कपड़े का मूल रंग (सफेद) रखना हो वहाँ मोम लगाना चाहिए।

ब्लॉक्स के द्वारा मोम लगाना

यदि कपड़े पर एक से अधिक बार एक ही डिजाइन को कपड़े पर बनाना हो, तो इसके लिए लकड़ी के ब्लॉक्स का उपयोग किया जाता है। इसके लिए मोम गर्म होने पर ब्लॉक को मोम में अच्छी तरह

डुबोकर कपड़े पर लगा दें। कुछ सेकंड बाद ब्लॉक को कपड़े पर से उठा दें। अब यदि कपड़े पर डिजाइन में कहीं मोम न आया हो, तो ब्रश की सहायता से मोम लगा लें, इस विधि से कपड़े पर कम समय में मोम लग जाता है। ब्लॉक से तथा ब्रश से मोम लगाते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि मोम के छींटें कपड़े पर ना गिरें।

यही कार्य हम मोमबत्ती द्वारा भी कर सकते हैं, इससे कपड़े पर सीधे बिंदु गिरा सकते हैं।

मोम लगाते समय निम्नलिखित सावधानियाँ रखनी चाहिए।

सावधानियाँ

- मोम लगाते समय कपड़े पर मोम के छींटें नहीं गिरना चाहिए।
- मोम लगाने से पहले यह देख लें कि मोम अधिक गर्म या ठण्डा न हो।
- कपड़े पर एक तरफ मोम लगाने के बाद कपड़े के पिछली तरफ भी मोम लगाना आवश्यक है।
- कपड़े पर मोम लगाने के बाद उसे मोड़ना नहीं चाहिए।
- कपड़े पर मोम लगाने के बाद उसे धूप में नहीं रखना चाहिए।

रंगों के बारे में जानकारी

कपड़े पर मोम लगाने के बाद कपड़े को रंगा जाता है। बटिक कला में कपड़े को रंगने के लिए दो प्रकार के रंग बनाए जाते हैं, पहला ब्रेन्थाल दूसरा साल्ट रंग। एक को बेस रंग तथा दूसरे को साल्ट (नमक) रंग कहते हैं।

बेस रंग बनाने के लिए टर्की रेड ऑयल, कॉस्टिक सोडा और साल्ट रंग बनाने के लिए साधारण नमक तथा रंग की आवश्यकता रहती है।

बेस रंग	साल्ट रंग
ए. टी.	यलो जी. डी. साल्ट
एम. एन	ब्ल्यू बी. साल्ट
ए. एस.	जी. पी. साल्ट
ए. एन.	आरेंज जी.सी. साल्ट
एफ. आर.	स्कारलेट आर. सी. साल्ट
जी. आर.	ब्लैक के. साल्ट
बी. एन.	रेड बी. साल्ट
सी. टी.	वायलेट बी. साल्ट एवं
	क्रोनीथ बी. साल्ट

उदाहरण– एक मीटर कपड़े को रंगने के लिए रंग की कितनी मात्रा की आवश्यकता होगी। वह किन बेस रंगों व साल्ट रंगों से रंगा जाएगा, यह नीचे दी गई सारिणी में बताया गया है।

पीले रंग के लिए		
ए. टी. बेस	–	5 ग्राम
यलो जी.सी. साल्ट	–	10 ग्राम
कास्टिक सोडा	–	1 चम्मच
टर्की रेड ऑयल	–	1 चम्मच
नमक	–	1 चम्मच

लाल रंग		
एम.एन. या ए.एस. बेस	–	5 ग्राम
स्कारलेट आर.सी. साल्ट	–	10 ग्राम
कास्टिक सोडा	–	1 चम्मच
टर्कीरेड ऑयल	–	1 चम्मच
नमक	–	10 ग्राम

नीला रंग

ए.एस. बेस	-	5 ग्राम
ब्ल्यू बी.साल्ट	-	10 ग्राम
कास्टिक सोडा	-	1 चम्मच
टर्कीरेड ऑयल	-	1 चम्मच
साधारण नमक	-	10 ग्राम

काला रंग

ए.एन.	-	7 ग्राम
ब्लेक के. साल्ट + ब्ल्यू के. साल्ट	-	10+5ग्राम
कास्टिक सोडा	-	1 चम्मच
टर्की रेड ऑयल	-	1 चम्मच
नमक	-	15 ग्राम

मैरून

एम.एन. बेस	-	5 ग्राम
जी.पी. साल्ट	-	10 ग्राम
कास्टिक सोडा	-	1 चम्मच
टर्की रेड ऑयल	-	1 चम्मच
साधारण नमक	-	10 ग्राम

आरेंज

ए.एस. बैस	-	5 ग्राम
आरेंज जी.सी. साल्ट	-	10 ग्राम
कास्टिक सोडा	-	1 चम्मच
टर्कीरेड ऑयल	-	1 चम्मच
नमक	-	10 ग्राम

ब्राउन

ए.टी. या सी.टी. बेस	-	5 ग्राम
ब्ल्यू बी. या ब्लेक के. साल्ट	-	5 ग्राम
कास्टिक सोडा	-	1 चम्मच
टर्की रेड ऑयल	-	1 चम्मच
नमक	-	5 ग्राम

ऊपर यह बताया गया है कि किस बेस रंग को किस साल्ट रंग में मिलाने से कौन-सा रंग बनता है तथा यह एक मीटर कपड़े को रंगने के लिए कितनी मात्रा में रंग आवश्यक है। कपड़े की लम्बाई के अनुसार इसे बढ़ाया जा सकता है।

बटिक के दूसरे प्रकार का रंग है- इंडिगों रंग- यह कपड़े पर सीधे ही लगाया जाता है। इस विधि में मोम लगाने की आवश्यकता नहीं रहती है तथा एक ही बार में 2-3 रंगों का प्रयोग किया जा सकता है।

इंडिगों ग्रीन, इंडिगों स्काई ब्ल्यू, इंडिगों परपल, इंडिगों लाल आदि प्रकार के कलर होते हैं।

यह दो प्रकार से कपड़ों पर रंगे जाते हैं।

1) पानी में रंगों को घोलकर

2) कपड़े पर ब्रश द्वारा लगाकर

रंग बनाने की विधि

बेस रंग- बेस रंग को हम प्रथम डिप कहते हैं, क्योंकि कपड़े को पहले हम इसमें रंगते हैं।

साल्ट रंग- साल्ट रंग को हम द्वितीय डिप कहते हैं, क्योंकि बेस रंग में कपड़ा रंगने के बाद हम उसी कपड़े को साल्ट रंग में रंगते हैं।

बेस रंग बनाने की विधि

बेस रंग बनाने के लिए सर्वप्रथम एक बाउल लें। उसमें रंग डालकर उसमें टर्की रेड ऑयल डालकर अच्छी तरह से पेस्ट बना

लें। फिर पेस्ट बनाने के बाद 1 कप गर्म पानी उसमें डाल दें। फिर उसमें कॉस्टिक सोडा डालकर मिला लें। बेस रंग तैयार हो जाएगा।

साल्ट रंग बनाने की विधि

कपड़े को बेस रंग में रंगने के बाद इसे साल्ट रंग में रंगते हैं। इसके लिए दूसरा बाउल लें। इसमें कपड़े की लम्बाई के अनुसार साल्ट रंग डालें। उसमें 1/2 कप ठंडा पानी मिला लें। अगर गर्मी अधिक हो, तो बर्फ का टुकड़ा मिला सकते हैं। इस तरह साल्ट रंग तैयार हो जाता है।

रंगने की विधि

कपड़े पर रंग करने के लिए सबसे पहले बेस और साल्ट रंग तैयार कर लें। अब एक टब में इतना पानी लें, जिसमें कपड़ा डूब जाए। कपड़ा गीला करने से कपड़े पर धब्बे नहीं पड़ते हैं और रंग कपड़े पर एक समान आता है। अब एक टब में बेस रंग तैयार करें तथा दूसरे टब में साल्ट रंग तैयार कर लें, फिर कपड़े को सादे पानी में भिगोकर बेस रंग (प्रथम डिप) में डाल दें। थोड़ी देर बाद उसे साल्ट रंग में डाल दें। यह प्रक्रिया दो-तीन बार दोहराना चाहिए, जिससे कि रंग पक्का हो जाए तथा कपड़े पर ठीक प्रकार से आ जाए। अब कपड़े को छाँव में सुखा दें। यदि कपड़े पर कहीं पर धब्बे

दिखाई दें, तो उसे पहले कलर में अच्छी तरह रगड़ दें। फिर उसे साल्ट रंग में रंग दे। ऐसा करने से धब्बे मिट जाते हैं तथा रंग एक समान हो जाता है।

अब यदि कपड़े पर दूसरा कलर करना है, तो जिस स्थान पर पहले वाला रंग रखना है, वहाँ मोम लगा दिया जाता है तथा दूसरा गहरा रंग बनाकर इसमें रंग लिया जाता है। इस तरह से कपड़ा दो रंग में रंग जाएगा।

कपड़े पर से मोम निकालना

कपड़े पर से मोम उतारने के दो तरीके हैं। साबुन के पानी में उबालना और प्रेस द्वारा। जब कपड़े पर से मोम को उतारा जाता है, तभी उसकी डिजाइन व सुंदरता पता चलती है।

साबुन के पानी द्वारा–सर्वप्रथम कपड़े के अनुसार पानी लें। पूरे पानी में कपड़ा भीग जाए उससे ज्यादा पानी की मात्रा होना चाहिए। सबसे पहले पानी को ऊबाल लें, उसमें साबुन की चिप्स (कतरन) डालकर उबाल लें तथा रंग किए कपड़े को उसमें डालकर चलाएं। सारा मोम धीरे-धीरे निकल जाएगा। मोम निकल जाने के बाद उसे निकालकर ठंडे पानी में धो लें, सारा साबुन निकल जाए तब सुखाकर प्रेस कर लें।

प्रेस द्वारा– प्रेस के द्वारा भी कपड़े पर से मोम उतार सकते हैं। कपड़े पर से पहले मोम की मोटी परत चाकू से उतार लें। फिर एक पुराना पेपर बिछाकर उस पर कपड़े को बिछा लें उस पर फिर से पुराना अखबार रख दें। प्रेस को गर्म करने के बाद जो पेपर कपड़े पर बिछा है, उस पर चला दें। ऐसा कई बार करने से सारा मोम कागज पर आ जाता है। फिर कपड़े को ठंडे पानी से साबुन द्वारा धोकर सुखा लें।

इंडिगों रंग द्वारा कपड़े को रंगना

इंडिगों रंग से 1 मीटर कपड़े को रंगने के लिए लगने वाली रंग की मात्रा-

इंडिगों रंग	-	5 ग्राम
यूरिया	-	15 ग्राम
सोडियम नाइट्रेट	-	15 ग्राम
गंधक का तेजाब	-	1 चम्मच

प्रथम विधि

इस विधि से कपड़े को रंगने के लिए सबसे पहले कपड़े को सादे पानी में भिगो लें। अब रंग बनाने के लिए सबसे पहले मग में 1 कप गर्म पानी लेकर उसमें यूरिया 15 ग्राम डाल देंगे। फिर 5 ग्राम इंडिगों

रंग डाल दें। इसके बाद इसमें 15 ग्राम सोडियम नाइट्रेट डाल दें। अब यह घोल एक टब पानी लेकर उसमें तेजाब डाल दें। अब भीगे हुए कपड़े को रंगवाले टब में डालें, फिर तेजाब के घोल वाले दूसरे टब में डाल दें। अब इस कपड़े को सुखाने के बाद इस पर इंडिगों रंग आ जाता है।

दूसरी विधि

यह रंग ब्रश द्वारा भी कपड़े पर लगाया जा सकता है। इस विधि में रंग की कम मात्रा लगती है। इस विधि में एक साथ 3-4 रंगों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

1 मीटर कपड़े को रंगने के लिए रंग की मात्रा–

रंग की मात्रा	-	1.5 ग्राम
यूरिया	-	4.5 ग्राम
सोडियम नाइट्रेट	-	4.5 ग्राम
गोंद	-	2 चम्मच

सबसे पहले एक भाग में थोड़ा गर्म पानी लें। उसमें रंग, यूरिया तथा सोडियम नाइट्रेट मिलाकर घोल तैयार कर लें, फिर गोंद मिलाकर पेस्ट तैयार कर लें। अब कपड़े को फ्रेम में कस लें तथा डिजाइन पर

जो भी रंग लगाना है, उसके अनुसार पेस्ट बनाकर डिजाइन पर लगाएं। यह ब्रश की सहायता से लगाया जाता है। अब रंग सूखने के लिए रख दें, फिर एक टब पानी में थोड़ा-सा तेजाब डालें। कपड़े का रंग सूखने पर उसे तेजाब वाले पानी में डाल दें। अब हमें कपड़े पर एक साथ अनेक रंग दिखाई देते हैं। अब सभी डिजाइन पर मोम लगा दें। अब ब्रेंथाल रंग जो भी कलर लेना है, उसके अनुसार बेस तथा साल्ट रंग तैयार कर लें। कपड़े को उसमें डालकर रंग लें। अब कपड़े पर से मोम निकालने के बाद कपड़े पर क्रैक्स की डिजाइन तथा इंडिगों रंग दिखने लगते हैं।

सावधानियाँ

- रंग करते समय तेजाब का अधिक प्रयोग न करें।
- साफ ब्रश का प्रयोग करें, मोम लगे ब्रश का प्रयोग न करें।
- पेस्ट बनाने के लिए गोंद का उपयोग करें।
- ब्रश द्वारा रंग लगाएं तो रंग को सुखाने के बाद ही उसे तेजाब के पानी से निकालें।

रंग संयोजन

रंग संयोजन के कई लाभ हैं। इससे कपड़े पर डिज़ाइन लेने व बनाने के लिए सुविधा रहती है। यह तय कर लेते हैं कि डिजाइन के

किस भाग में कौन-सा रंग करना है, उसी के अनुसार रंग योजना बना ली जाती है। रंग करते समय हमेशा हल्का रंग पहले रंगना चाहिए, फिर गहरा रंग रंगना चाहिए अर्थात् हल्के रंग से गहरे रंग की प्रक्रिया अपनाते हुए कपड़े को अनेक रंगों में रंग सकते हैं। इसे सिंगल, डबल रंग, मल्टी रंग कहते हैं।

रंग संयोजन इस प्रकार करते हैं। जैसे-

पीला	-	लाल	-	काला
हरा	-	काला		
पीला	-	आरेंज	-	काला
पीला	-	नीला	-	बैंगनी
आरेंज	-	काला		
आरेंज	-	मेरून	-	काला

इस तरह कई प्रकार से कलर संयोजन कर सकते हैं।

रंग करते समय रखने वाली सावधानियाँ

- रंग बनाते समय कौन-सा बेस या साल्ट रंग है, यह जानकारी होना आवश्यक है।
- रंग हल्के से गहरे की ओर करना चाहिए।
- रंग परीक्षण करके देख लेना चाहिए।

- कपड़े को रंगने से पहले गीला कर लेना चाहिए।
- रंग करते समय दस्ताने पहनना चाहिए।
- कपड़े की लम्बाई के अनुसार रंग की मात्रा लें।
- कपड़े पर दूसरी बार मोम लगाते समय कपड़े को अच्छी तरह सुखाएँ।
- रंग करने के बाद मग, टब, चम्मच, दस्ताने अच्छी तरह धोकर साफ करें।

क्रैक्स बनाना-

अभी तक हमने बटिक में साधारण तरह से डिजाइन बनाकर रंग किया है। अब ऐसी डिजाइनें भी बटिक में होती हैं, जिसमें आड़ी,

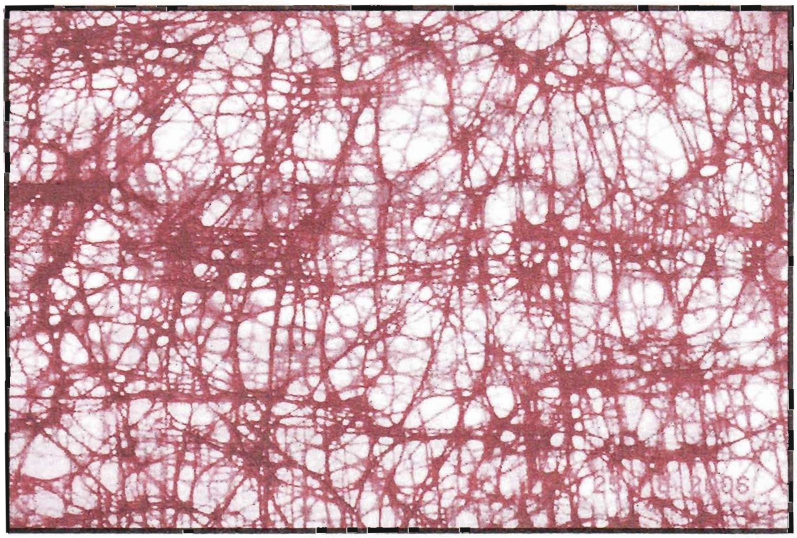

तिरछी, बेतरतीब से पड़ी हुई लाइनें होती हैं, ये किस प्रकार बनती हैं, यह आड़ी-तिरछी लाइनें जितनी सुंदर व कठिन प्रतीत होती हैं बनने में बहुत ही आसान हैं। इसकी विधि बहुत ही आसान है। इन लाइनों को बटिक कला में क्रैक्स कहा जाता है। यह सरलता से बनाई जा सकती हैं। इसे कपड़े पर कई तरह से डाला जा सकता है।

- कपड़े को धोकर प्रेस कर लें, फिर पूरे कपड़े पर ब्रश से मोम लगा दें। मोम लगाने के बाद कपड़े को हल्का-हल्का दबा दें तथा कपड़े को रंग में रंग लें।
- दूसरी विधि में सारे कपड़े पर मोम लगाकर कपड़े को फोल्ड कर दें। कपड़े को फोल्ड स्केल की सहायता से भी कर सकते हैं। अब उसे रंग में डालकरं रंग लें।
- कपड़े पर मोम लगा लें। आलपीन तथा किसी भी नुकीली वस्तु से आड़ी-तिरछी लाइनें बना लें, यह लाइन धीरे-धीरे बनाएं ताकि कपड़ा फट ना जाए। अब कपड़े पर रंग कर लें।

कपड़े पर डिजाइन तथा क्रैक्स एक साथ बनाना-

अभी तक हमने कपड़े पर डिजाइन अलग तथा क्रैक्स अलग-अलग बनाए। अब दोनों एक साथ बनाने के लिए सबसे पहले कपड़े

पर एक डिजाइन बनाएं। जहाँ मूलरंग (सफेद) रखना है, वहाँ मोम लगाया जाता है, यदि कपड़े का बैकग्राउण्ड कलर में करना है, तो डिजाइन पर मोम लगा दें। अब कपड़े को रंग कर लें। अब बैकग्राउंड पीला, लाल, नीला जो भी रंग में हो उस पर मोम लगा दें। पूरे कपड़े पर मोम लगाने के बाद उसे हल्का-हल्का दबा दें, ताकि क्रैक्स आ जाएं। अब कपड़े को दूसरे रंग में रंग दें। इस तरह से कपड़े पर डिजाइन व क्रैक्स एक साथ दिखाई देते हैं।

फिनिशिंग

अब यदि बटिक के रंग किए कपड़ों पर कहीं कोई धब्बे रह जाते

हैं, तो उसे फेब्रिक पेंटिंग का रंग लेकर उसी रंग से ब्रश से लगा दें तथा सूखने दें।

बचे हुए मोम का उपयोग

कपड़े पर से जब मोम उतारा जाता है, तो इस मोम का हम पुनः उपयोग कर सकते हैं। इस मोम से मोमबत्ती बनाई जा सकती है।

सावधानियाँ

मोम उतारते समय निम्नलिखित सावधानी रखना चाहिए।

- मोम उतारते समय सर्फ का उपयोग ना करें।
- यह कपड़े धोने के साबुन से या साबुन की चिप्स से निकाला जा सकता है।
- मोम उतारते समय कपड़े को लगातार चलाते रहना चाहिए।
- मोम उतारने के बाद कपड़े को ठंडे पानी से धोएं।
- सिल्क पर से मोम उतारते समय अत्यधिक गर्म पानी न लें।
- प्रेस द्वारा मोम उतारते समय दोनों तरफ पेपर बिछाएं।
- कपड़े को हमेशा छाया में सुखाना चाहिए।

बटिक कला में रोजगार की संभावनाएं

बटिक कला का उपयोग आमदनी के लिए भी किया जाता है, ताकि परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हो।

- इस कला में सहायक रोजगार के रूप में जैसे समूह का निर्माण कर व्यावसायिक संस्थान शुरू किया जा सकता है।
- किसी व्यावसायिक या अन्य संस्थानों के लिए सामग्री का निर्माण भी किया जा सकता है।
- प्रशिक्षक के रूप में किसी भी संस्था या प्रशिक्षण संस्थान में नौकरी की जा सकती है।
- महिलाओं के लिए यह घरेलू व्यवसाय है।

सामग्री का विक्रय

- हस्तशिल्प निगम
- शासकीय एम्पोरियम
- निजी एम्पोरियम
- खादी जिला ग्राम उद्योग
- स्थानीय बाजार

इसके अतिरिक्त किसी भी दुकान से ऑर्डर लेकर उनके लिए सामग्री बनाई जा सकती है।

बटिक कला में एक चादर, साड़ी तैयार करते समय लगने वाली सामग्री की कीमत-

एक चादर की कीमत

एक चादर की कीमत	-	240
रंग की कीमत	-	65
मोम की कीमत	-	35
अन्य सामग्री	-	45
कुल		**385**

एक साड़ी की कीमत

एक साड़ी की कीमत	-	225
रंग की कीमत	-	65
मोम की कीमत	-	35
अन्य सामग्री	-	40
कुल		**365**

वॉल पीस की कीमत		
कपड़े की कीमत	-	30
रंग की कीमत	-	20
मोम की कीमत	-	10
अन्य सामग्री	-	20
कुल		**80**

लाभ :-

तैयार सामग्री की लागत में कम से कम 20% से 25% तक लाभ जोड़कर उसका मूल्य निर्धारित किया जा सकता है।

प्रशिक्षण :-

इस कार्य को कोई भी व्यक्ति घर बैठे कर सकता है विशेषकर महिलाएँ एवं युवतियाँ तथा बुजुर्ग व्यक्ति। इस काम को व्यवसाय के रूप में शुरू करने के पहले प्रशिक्षण जरूर लें। इस काम का प्रशिक्षण जनशिक्षण संस्थान, फैशन डिजाइनिंग संस्थान या इस कला के कुशल कारीगरों से भी लिया जा सकता है। प्रशिक्षण लेने से आप अधिक कुशलतापूर्वक कार्य कर सकते हैं।

बटिक कला के नमूने

प्रकाशक : राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा
भारतीय ग्रामीण महिला संघ, इन्दौर (म.प्र.)
महालक्ष्मी नगर, सेक्टर 'आर', इन्दौर (म.प्र.)-452010,
फोन : 2551917, 2574104 फैक्स : 0731-2551573
e-mail : srcindore@dataone.in • literacy@satyam.net.in